जादुई बर्तन

भारतीय लोककथा

भारत में बहुत पहले एक आदमी रहता था. उसके घर में एक पत्नी और कई बच्चे थे. वह बहुत गरीब था. उसकी पत्नी बहुत दुखी रहती थी क्योंकि घर में खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं था. उसके बच्चे हमेशा भूखे और उदास रहते थे. गरीब आदमी अपने परिवार के बारे में बहुत चिंतित रहता था. उसे डर था कि कहीं बच्चे भूख से जल्द ही मर न जाएं.

एक दिन जब वे बहुत भूखे थे और दुखी थे, तो गरीब आदमी ने अपने परिवार को बचाने का फैसला किया. उसने परिवार से अलविदा कहा. वो एक शांत जगह की तलाश में निकला, जहाँ वो मदद के लिए देवी दुर्गा की प्रार्थना कर सके. वो कई गांवों में घूमता रहा, लेकिन हर जगह बहुत सारे लोग थे. उसे कोई भी ऐसा स्थान नहीं मिला जहाँ वो अकेला रह सके.
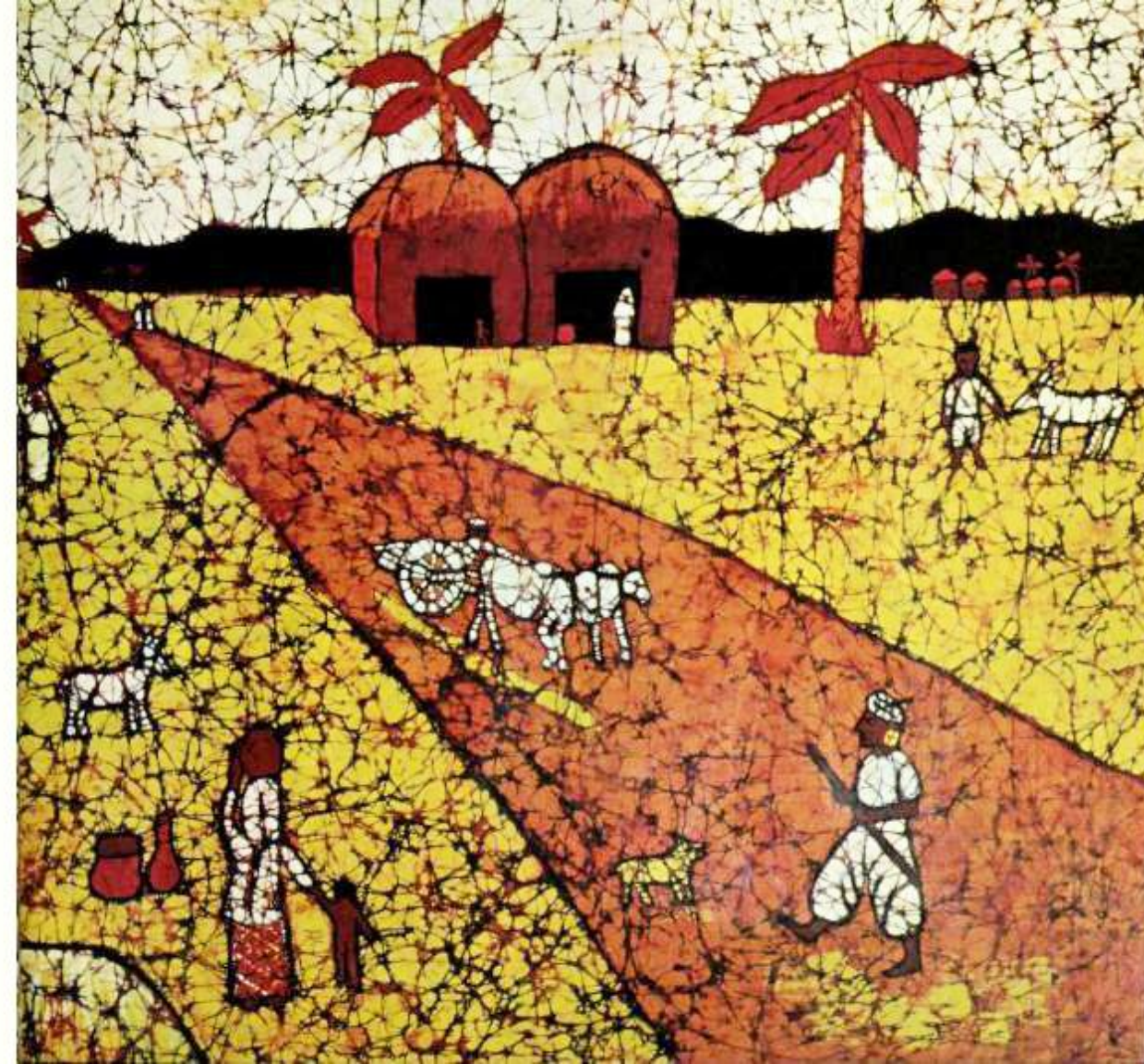
आखिर में गरीब आदमी जंगल के किनारे आया. उसे लगा कि वहाँ उसे प्रार्थना के लिए एक शांत जगह मिलेगी. वो घने जंगल में बहुत दूरी तक गया. अंत में वो एक ऐसे खुले स्थान पर पहुंचा जहां पहले और कोई भी आदमी नहीं गया था. वहां उसने देवी दुर्गा की प्रार्थना शुरू की.

हालाँकि वह आदमी बहुत गरीब था, पर वो एक नेक और पवित्र आदमी था. जीवन के प्रत्येक दिन उसने खाने-पीने से पहले अपने हाथ-पांव धोकर देवी दुर्गा की प्रार्थना की थी. इसलिए देवी दुर्गा ने जंगल में उस गरीब आदमी की प्रार्थना सुनी और वो उसके सामने प्रकट हुईं. "जल्द ही तुम और तुम्हारी पत्नी और बच्चों के पास खाने के लिए पर्याप्त चावल होंगे," देवी ने वादा किया.

अचानक देवी दुर्गा गायब हो गईं और उनके स्थान पर मिट्टी का बना एक खाना पकाने का बर्तन प्रकट हुआ. गरीब आदमी को दुख हुआ क्योंकि वो बर्तन देखने में एक बहुत ही साधारण बर्तन था. "खाना पकाने वाले बर्तन का क्या उपयोग?" गरीब आदमी ने सोचा, "मेरे पास तो इसमें खाना पकाने के लिए चावल तक नहीं है?" फिर भी उसने मिट्टी के घड़े को उठाया और अपने परिवार के पास वापस चल पड़ा.

घने जंगल के बीच चलना मुश्किल था. और जल्द ही गरीब आदमी जड़ों और लताओं पर ठोकर खाकर गिर पड़ा. गिरते ही, खाना पकाने वाला बर्तन उसके हाथों से छूट गया और जमीन पर लुढ़क गया. जब घड़ा पलटा तो उसमें से बेहतरीन चावल जमीन पर फैल गए. गरीब आदमी खुशी और विस्मय में चावल को घूरता रहा. फिर उसकी समझ में आया कि देवी दुर्गा ने उसे एक जादुई खाना पकाने का बर्तन दिया था, और अब वो और उसके परिवार में सभी पेट भरकर चावल खा सकते थे.
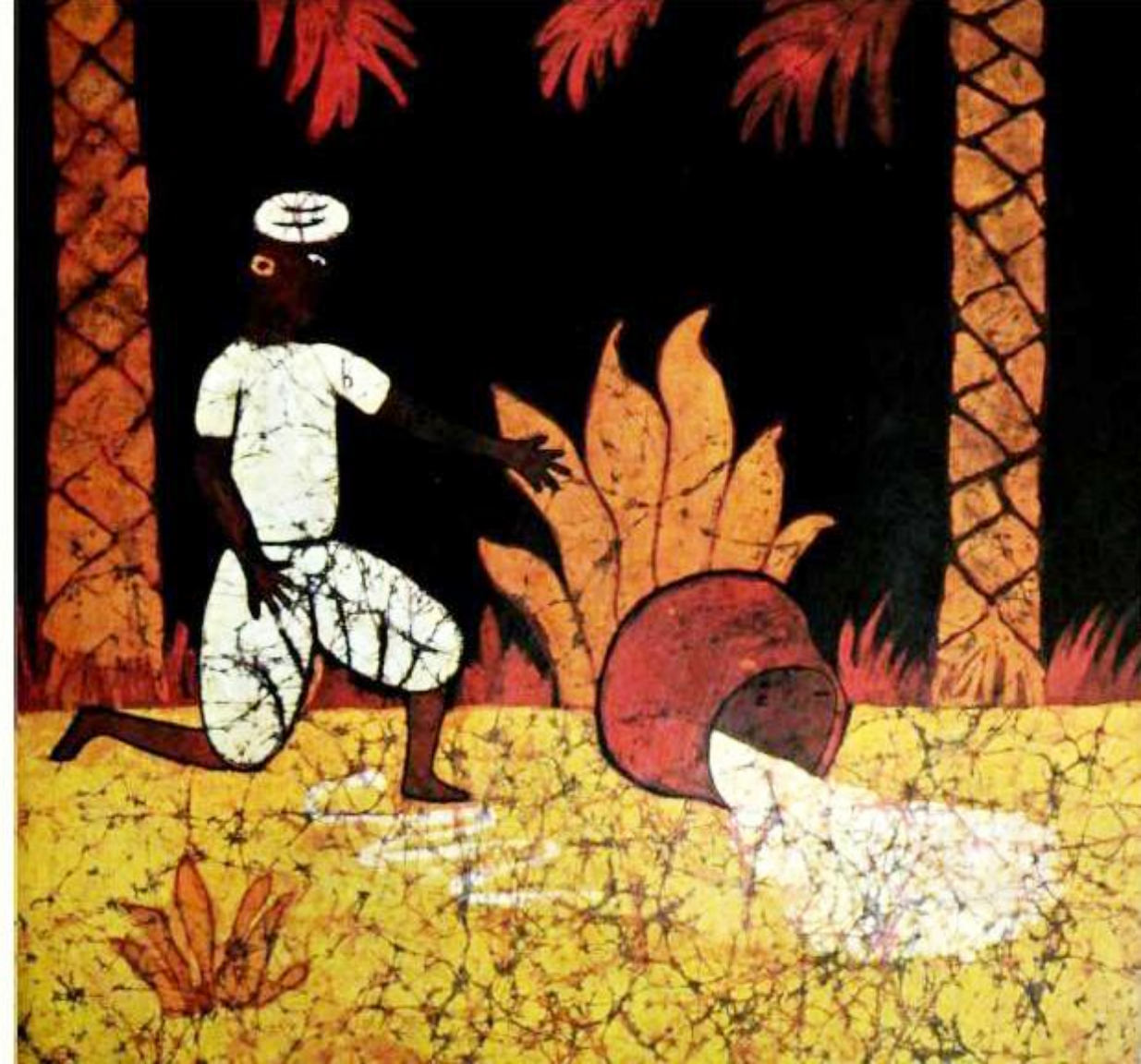
गरीब आदमी बहुत भूखा था पर फिर भी हाथ धोने तक उसने चावल न खाने का निश्चय किया. वो देवी दुर्गा को धन्यवाद देकर और प्रार्थना करके ही भोजन करेगा. लेकिन उसे जमीन पर गिरे हुए बढ़िया चावलों को बर्बाद करना भी गवारा नहीं था. इसलिए बहुत सावधानी से उसने चावल के प्रत्येक दाने को इकट्ठा किया और उन्हें अपनी कमीज में बाँधा. फिर वो चावल और मिट्टी के बर्तन को लेकर आगे चला.

अंत में गरीब आदमी जंगल के किनारे पर पहुंचा और वो निकटतम गांव में आराम करने के लिए रुका. गाँव में एक सराय थी और उसके बगल में एक कुँआ था जहाँ वो अपने हाथ-पैर धो सकता था. स्नान करने से पहले गरीब आदमी ने अपना कीमती बर्तन सराय के मालिक को दे दिया और उससे उसका विशेष ध्यान रखने को कहा.
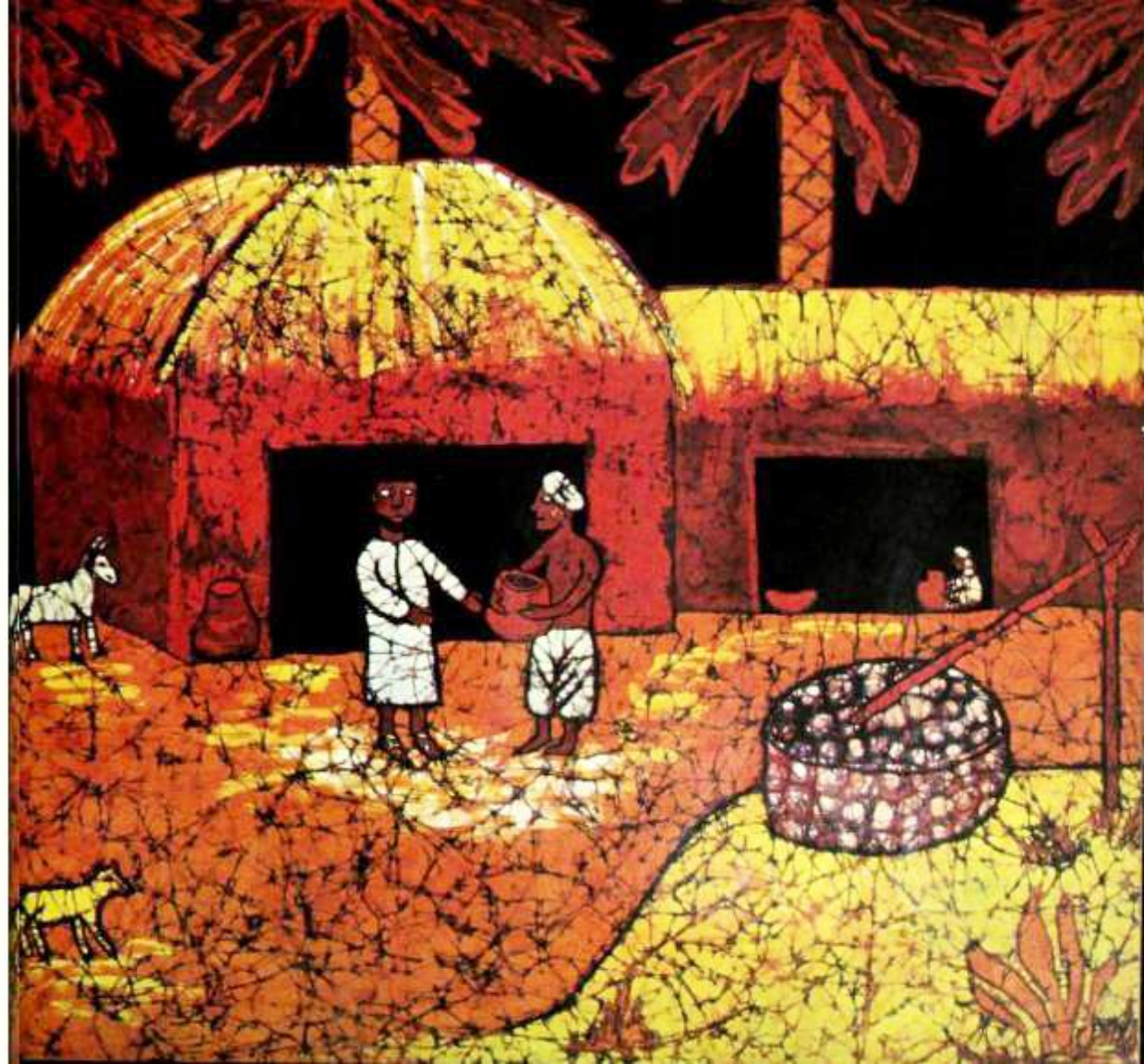
गरीब आदमी के कुएं पर जाने के बाद सराय के मालिक ने उस खाना पकाने के बर्तन को बारीकी से देखा. वो यह जानने को उत्सुक था कि ऐसे साधारण मिट्टी के बर्तन का विशेष ध्यान रखने के लिए उससे क्यों कहा गया था. उसने भीतर झाँका, लेकिन वहां कुछ भी नहीं था. उसने बाहर चारों ओर देखा, लेकिन वहां भी कुछ विशेष नहीं था. फिर जब उसने पेंदा देखने के लिए बर्तन को उल्टा किया तब उसमें से चावल की एक बौछार बाहर आई. सराय का मालिक तुरंत समझ गया कि वो ज़रूर एक जादुई बर्तन था. फिर उसने उस बर्तन को हड़पने की एक तरकीब सोची. इसलिए उसने उसी आकार और रंग का एक साधारण घड़ा लिया और उसे जादुई बर्तन की जगह पर रख दिया. फिर उसने अपनी पत्नी और बेटों को जल्दी से बुलाया. वो उन्हें दिखाना चाहता था कि उनका भाग्य अब चमका था.

गरीब आदमी ने स्नान किया और फिर देवी दुर्गा की प्रार्थना के बाद उसने वो चावल खाए जो जादू के बर्तन ने उसे दिए थे. वो फिर सराय में लौटकर आया. उसने सराय के मालिक से अपना बर्तन वापिस लिया. उसे इस बात का कोई अंदाज़ नहीं था कि वो साधारण घड़ा उसका जादुई बर्तन नहीं था. फिर गरीब आदमी एक-गांव के बाद दूसरे गांव होते हुए अपने घर की ओर चला. वो अब केवल अपने परिवार के बारे में सोच रहा था. उसे लगा कि बढ़िया और भरपेट चावल खाकर उन्हें आश्चर्य और खुशी होगी.
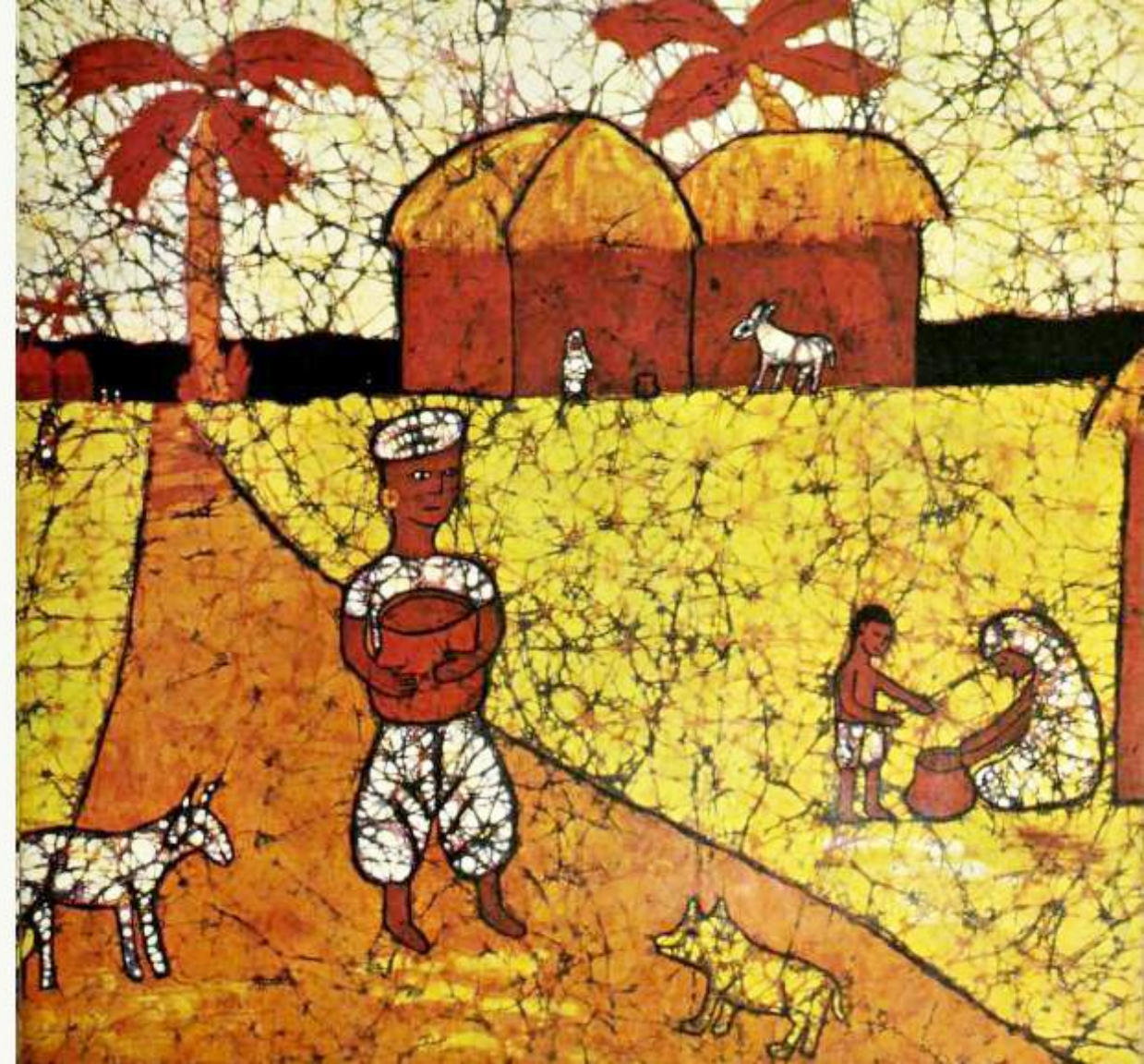
अंत में गरीब आदमी अपने गाँव पहुँचा, जहाँ भूखी पत्नी और बच्चे उसकी वापसी का इंतज़ार कर रहे थे. उसके चेहरे पर खुशी थी क्योंकि उसने परिवार को बताया कि वे अब फिर कभी भूखे नहीं रहेंगे. जल्दी से उसने बर्तन को उल्टा किया. उसे चावल की एक धार और बच्चों की आँखों में खुशी देखने की उम्मीद थी. लेकिन कुछ भी नहीं हुआ. चावल नहीं निकला. उसके बच्चों की आँखें अभी भी उदास और भूखी थीं. गरीब आदमी की पत्नी को लगा कि उसका पति जंगल में अपनी बुद्धि खो बैठा था. भला वो कैसे एक साधारण मिट्टी के घड़े को जादुई बर्तन समझ बैठा?

गरीब आदमी को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि उसे यकीन था कि उसे जंगल में एक जादू का बर्तन ही मिला था. दुःख से अभिभूत, उसे याद आया कि उसने अपना बर्तन सराय के मालिक के पास छोड़ा था और उसने ही उसका जादुई बर्तन चुराया होगा और उसकी जगह पर एक साधारण मिट्टी का बर्तन रख दिया होगा.

गरीब आदमी ने अपने परिवार से दुबारा जाने की भीख मांगी. पर परिवार का लगा कि उस आदमी की बुद्धि मारी गई थी. उन्हें इस बात का भी डर था कि वो जंगल में अपना रास्ता खो बैठेगा और फिर जंगली जानवर उसे खा जाएंगे. लेकिन गरीब आदमी निश्चित तौर पर अपने जादुई बर्तन को वापिस लाना चाहता था. इसलिए एक बार उसने फिर से अपने परिवार से अलविदा कहा.
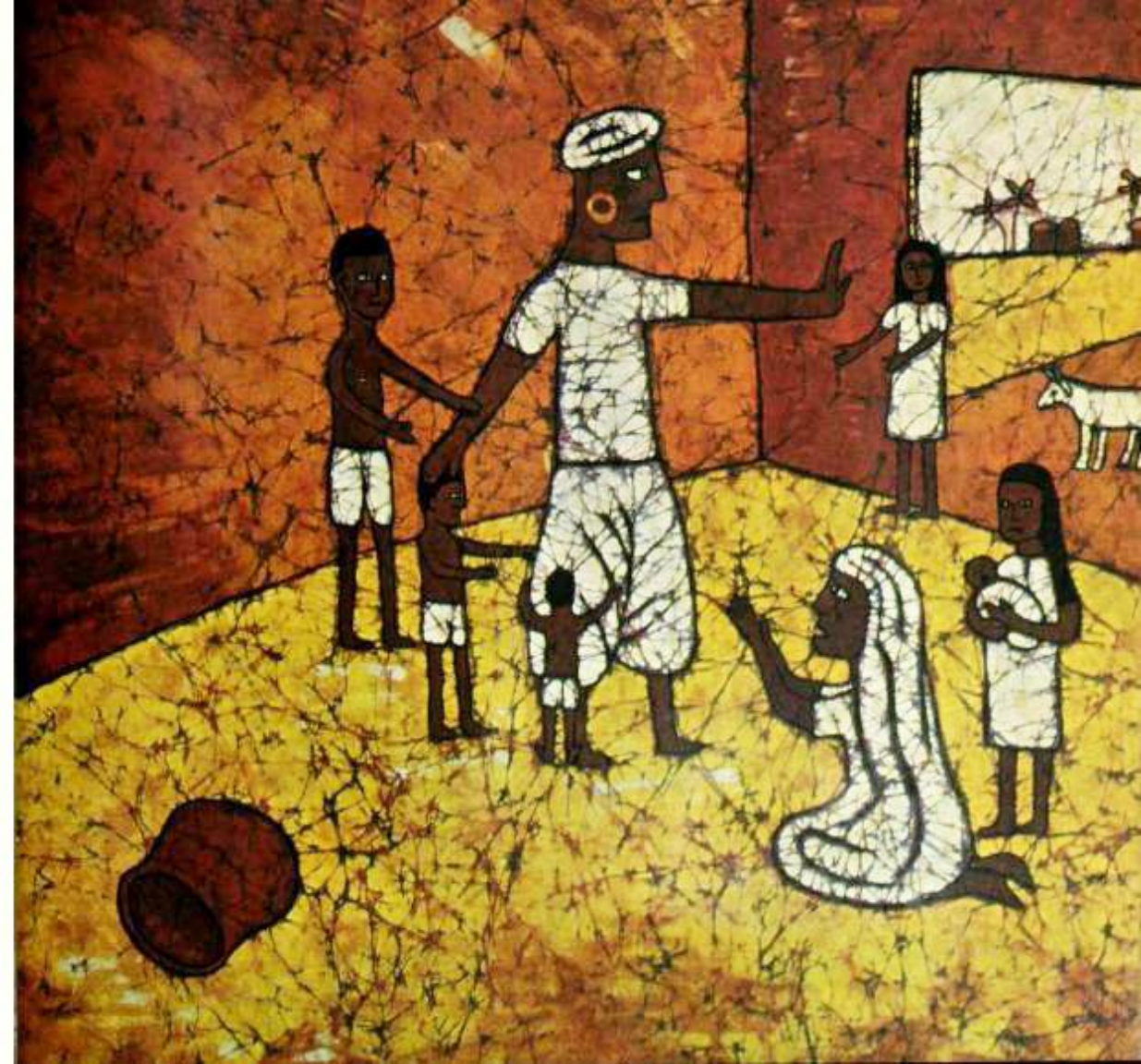
गरीब आदमी उस सराय में पहुंचा, जहाँ उसने अपना जादुई बर्तन छोड़ा था. "मुझे मेरा बर्तन वापस दे दो," उसने मांग की. लेकिन सराय के मालिक सिर्फ हंसा और उसने अपने बेटों को उस गरीब आदमी को लाठियों से पीटने के लिए बुलाया. गरीब आदमी बहुत दुखी हुआ और उसने एक बार फिर से जंगल में जाकर देवी दुर्गा की प्रार्थना करने और उनसे मदद मांगने का फैसला किया.

वो गरीब आदमी दुबारा गहरे जंगल में गया. जब वो एकदम वीरान इलाके में पहुंचा तब वो वहां प्रार्थना करने के लिए रुका. एक बार फिर देवी दुर्गा ने उसकी प्रार्थना सुनी और उसके सामने प्रकट हुईं. "मैं तुम्हें एक और जादू का बर्तन दूंगी," देवी ने कहा, "उसका बुद्धिमानी से उपयोग करना," यह कहकर देवी गायब हो गयीं और वहां पर एक मिट्टी का बर्तन दिखा जो ठीक पहले वाले की तरह ही था.

तुरंत उस गरीब आदमी ने बर्तन को उठाया और उसे पलटा. उसे लगा कि बर्तन के पेंदे में से चावल की एक धारा बह निकलेगी. लेकिन चावल के बजाय, राक्षसों के एक झुंड ने बर्तन में से छलांग लगाई और उन्होंने उस गरीब आदमी को पीटना शुरू कर दिया. सौभाग्य से जब उसने बर्तन को दाहिनी ओर मोड़ा तब राक्षसों ने उसे पीटना बंद कर दिया और वे वापस बर्तन में कूद गए. तब गरीब आदमी को देवी दुर्गा की बर्तन को बुद्धिमानी से उपयोग करने वाली बात समझ में आई.

एक बार फिर से गरीब आदमी सराय पहुंचा. सराय का मालिक एक बार फिर नए बर्तन के साथ उस गरीब आदमी को देखकर आश्चर्यचकित हुआ. उसे लगा कि वो नया बर्तन भी बहुत कीमती होगा. सराय के मालिक ने उस गरीब आदमी का दूसरा घड़ा भी हड़पने के लिए अपने बेटों को बुलाया. लेकिन गरीब आदमी ने जल्दी से जादू के बर्तन को पलट दिया. फिर राक्षसों ने सराय मालिक के निर्दयी बेटों को पीटना शुरू किया. जल्द ही वे दया की भीख मांगने लगे. "मुझे मेरा जादुई पकाने वाला बर्तन वापस दो," गरीब आदमी ने कहा. जब सराय मालिक ने अपना वादा निभाया, तो गरीब आदमी ने जादू के बर्तन को दाईं ओर मोड़ा और फिर सभी राक्षस घड़े के अंदर गायब हो गए.
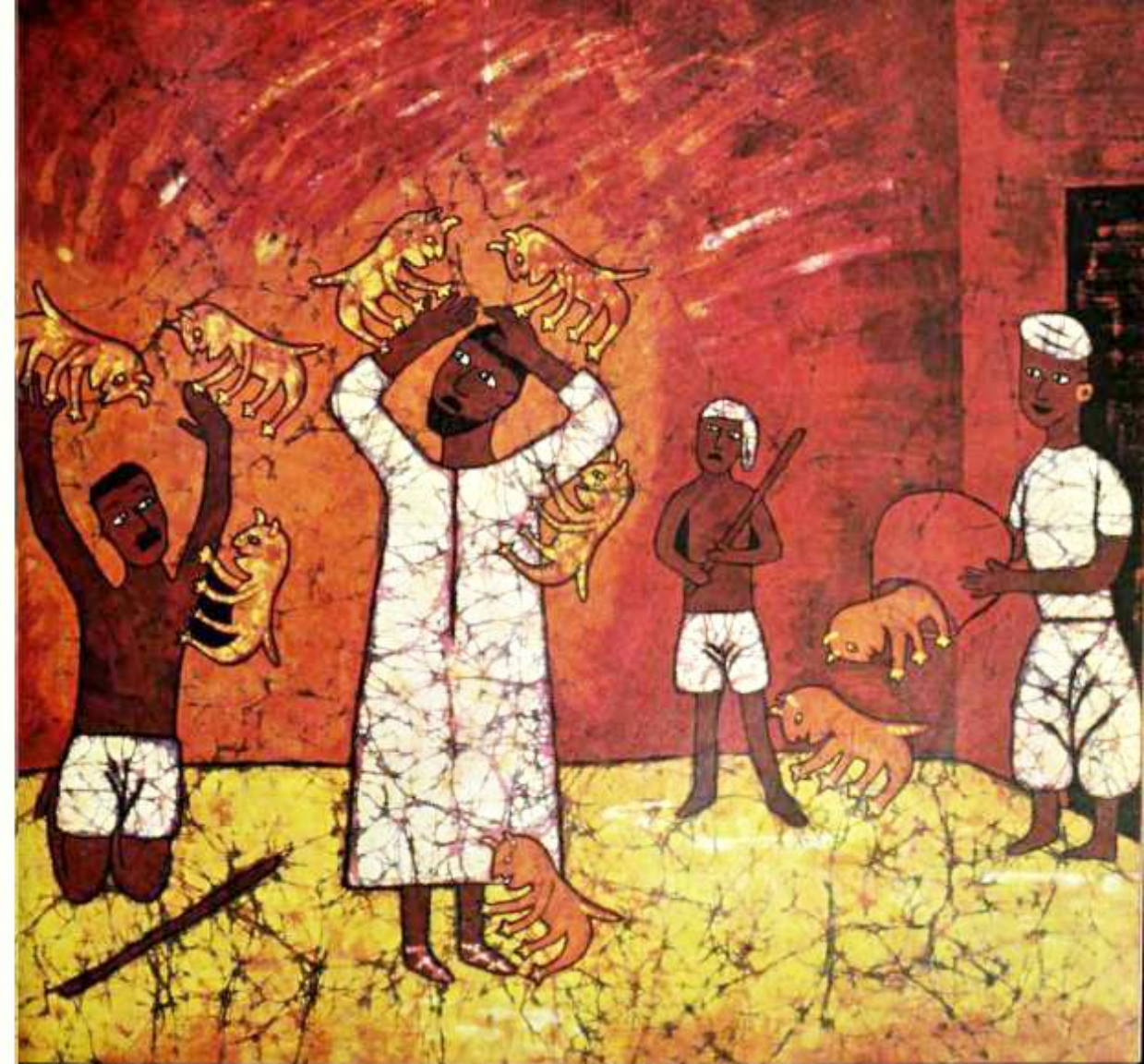
अब गरीब आदमी दोनों हाथ में एक-एक जादू का बर्तन लेकर अपने घर वापिस पहुंचा. परिवार उसे देखकर बहुत खुश हुआ क्योंकि उन्हें डर था कि शायद वो कभी वापस नहीं आए. जल्दी ही गरीब आदमी ने दूसरे जादुई बर्तन को एक सुरक्षित जगह छिपा दिया - क्या पता उसे कब दुबारा राक्षसों की जरूरत पड़े!
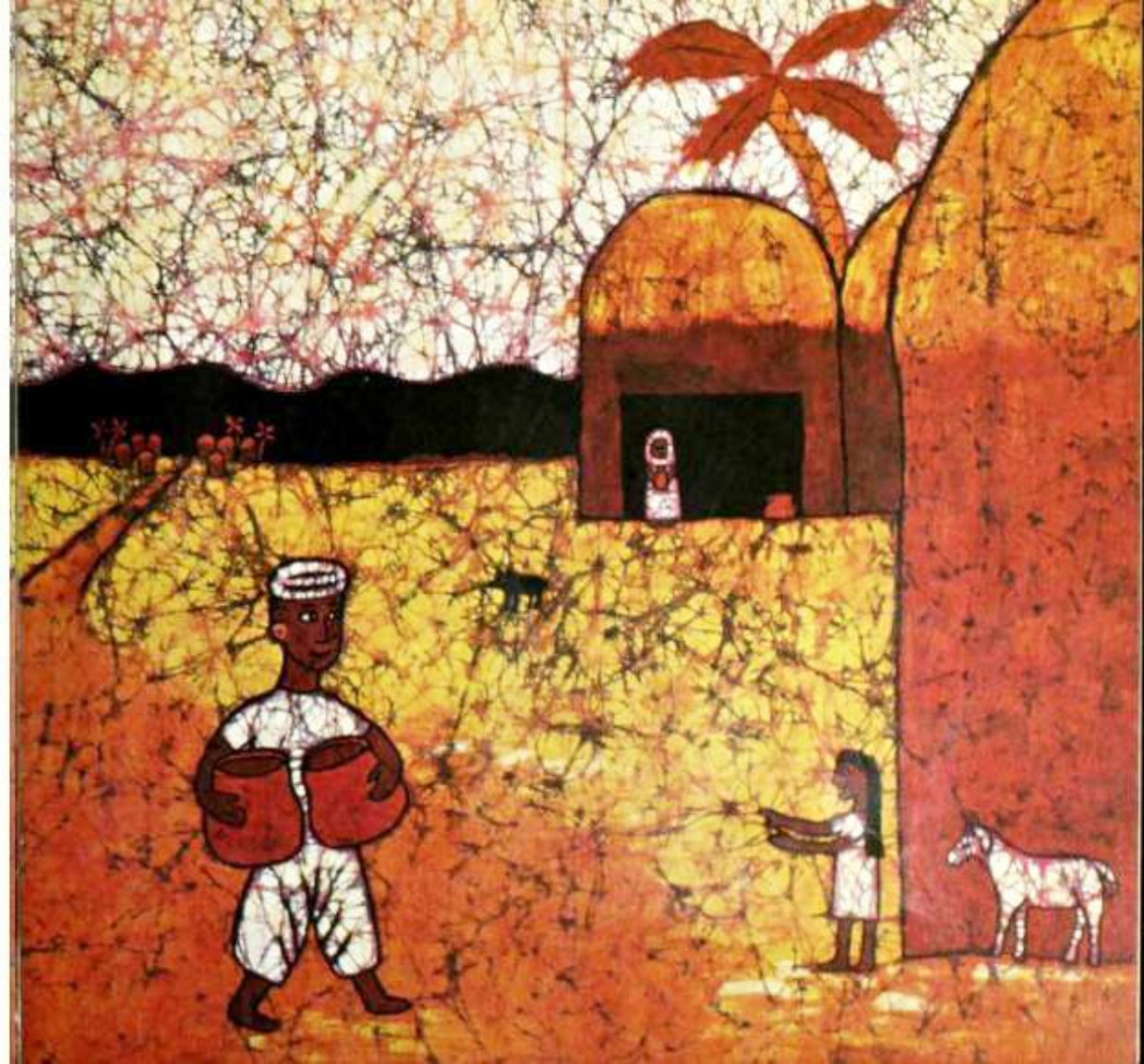
फिर उस गरीब आदमी ने अपना पहला जादुई बर्तन चालू किया. जैसे ही उसमें से चावल निकले उसने अपने परिवार के सभी लोगों के चेहरों पर खुशी और आश्चर्य देखा.

उस दिन से, गरीब आदमी और उसका पूरा परिवार भरपेट बेहतरीन चावल खा सके. सच में चावल इतना था कि वो पूरे गांव के लिए पर्याप्त था. फिर कभी कोई भूखा नहीं रहा. गरीब आदमी अब गरीब नहीं रहा. उसके बाद वो कई वर्षों तक आराम और खुशी से रहा.

समाप्त